ऋषि-मुनियों की ईर्ष्या

प्रश्न : पुराण में कथा है कि बालक ध्रुव नारद के भक्त थे; नारद नारायण के भक्त थे। बालक ध्रुव की भक्ति से मात्र छह महीने में ही नारायण प्रसन्न हो गये और उपलब्ध हो गये। और इसकी स्मृति में आकाश में एक तारा उगा—ध्रुव तारा। इससे अन्य ऋषि-मुनि ध्रुव के प्रति ईर्ष्या से और नारायण के प्रति शिकायत से भर गये, क्योंकि वे सब कठोर तपश्चर्या करके भी कुछ न पा सके थे। जब वे ऋषि-मुनि इकट्ठे होकर विचार करते थे, तब एक मछुआ आया और उसने उन सबको नदी की सैर का निमंत्रण दिया। वे सब गये और उन्होंने जगह-जगह सफेद चिन्ह देखे। ऋषि-मुनियों के पूछने पर मछुए ने कहा, इन सभी स्थलों पर ध्रुव ने पिछले जन्मों में तपश्चर्या की थी।

कृपा करके इस पुराण की कथा का हमें सार कहिए!

कथाएं इतिहास नहीं हैं। कथाएं पुराण हैं। इतिहास और पुराण का भेद समझ लेना चाहिए। इतिहास तो वह है जो कभी घटा, हुआ। पुराण वह है जो सदा होता है। इतिहास समय में घटता है, पुराण शाश्वत है। तो पुराण को सिद्ध करने की कोशिश मत करना कि वह हुआ कि नहीं, वह तो भूल ही हो गयी फिर। फिर तो तुम कविता को समझे ही नहीं, काव्य को पहचाने ही नहीं। फिर तो तुम गलत रास्ते पर चल पड़े। ऐसा चल रहा है पूरे मुल्क में, हजारों साल से चल रहा है, अभी भी चलता है। अभी कुछ दिन पहले लुधियाना में पुरी के शंकराचार्य ने चुनौती दी कि कोई भी अगर सिद्ध कर दे कि रामायण झूठ है तो मैं शास्त्रार्थ के लिए तैयार हूं। कुछ हैं जो सिद्ध करना चाहते हैं कि रामायण झूठ है। कुछ हैं जो सिद्ध करना चाहते हैं कि रामायण सच है। और दोनों एक ही नाव में सवार हैं। न रामायण झूठ है, न रामायण सच है—रामायण पुराण है। रामायण का समय से कोई संबंध नहीं, इतिहास से कोई संबंध नहीं। ऐसा कभी हुआ है, ऐसा सवाल ही नहीं है। ऐसा नहीं हुआ है, यह तो सवाल उठता ही नहीं है। ऐसा होता रहा है। ऐसा आज भी हो रहा है, अभी भी घट रहा है। पुराण का अर्थ है : जीवन का सार-निचोड़ थोड़ी-सी कहानियों में रख दिया है। कहानियों पर जिद्द मत करना, सार-निचोड़ को पकड़ना। 'बालक ध्रुव नारद के भक्त थे; नारद नारायण के भक्त थे।' इसका अर्थ हुआ कि भगवान तक सीधे पहुंचना कठिन होगा, सदगुरु चाहिए। इसका अर्थ हुआ कि भगवान से सीधा-सीधा मिलना कठिन होगा, मध्यस्थ चाहिए। इसका अर्थ हुआ कि कोई बीच में चाहिए जो तुम जैसा भी हो और भगवान जैसा भी हो, तो सेतु बन सकेगा। कोई ऐसा चाहिए जिसका एक हाथ तुम्हें पकड़े हो और एक हाथ जिसका परमात्मा पकड़े हो। एक हाथ तुम्हारे जैसा और एक हाथ परमात्मा जैसा! जो परमात्मा और मनुष्य के बीच में कहीं हो—संक्रमण हो, द्वार हो।

परमात्मा बहुत बड़ा है। आदमी बहुत छोटा है। दोनों में तालमेल कैसे बैठे? कोई चाहिए जो परमात्मा जैसा बड़ा हो, आदमी जैसा छोटा भी हो। गुरु इस दुनिया में सबसे बड़ा विरोधाभास है, सबसे बड़ा पैराडाक्स। अगर तुम गुरु को एक तरफ से देखो, अपनी तरफ से, तो तुम्हारे जैसा है। अगर तुम दूसरी तरफ से देखो तो परमात्मा जैसा है। इसलिए तो कोई भी अपने गुरु के लिए तर्क नहीं कर सकता, न प्रमाण जुटा सकता है। क्योंकि तुम्हारे तर्क और प्रमाण कुछ भी सिद्ध न कर सकेंगे उसके लिए, जिसको दूसरी तरफ से देखने की क्षमता न हो। वह कहेगा, हमारे जैसा ही तुम्हारा गुरु है; जैसे हमें भूख लगती है उसे लगती है; धूप आए तो हमें पसीना आता है, उसे आता है। इन बातों से बचने के लिए फिर कपोल-कल्पनाएं शुरू होती हैं। जैन कहते हैं, महावीर को पसीना नहीं आता। पागल हैं! बिलकुल पागलपन की बात है। जैन कहते हैं, महावीर को चोट करो तो खून नहीं निकलता, दूध निकलता है।

ये क्यों कहानियां गढ़ी गयी हैं? ये भक्त यह कह रहे हैं कि हमारा भगवान आदमियों जैसा नहीं

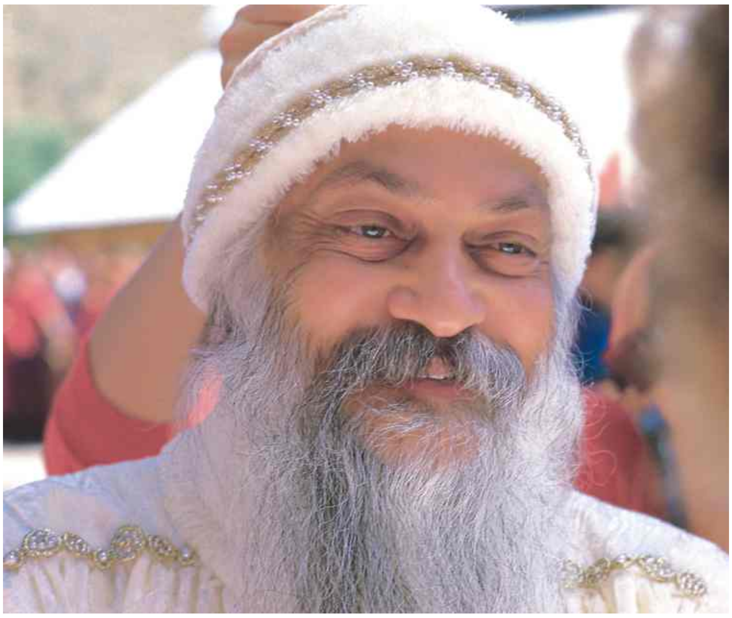

है। मगर तुम्हें यह सिद्ध करना पड़ रहा है कि पसीना नहीं आता, उससे साफ है कि पसीना आता होगा। तो काहे के लिए चिंता करते? दूसरे सिद्ध करते हैं कि पसीना आता है; खून ही निकलता है, दूध कहीं निकला है! भक्तों ने अपने गुरुओं को अलौकिक सिद्ध करने की बड़ी चेष्टाएं की हैं। उनकी चेष्टा को समझो सहानुभूति से तो सार्थक मालूम होती है। उनकी चेष्टा ही यह है, वे यह कह रहे हैं कि तुम हमारे गुरु को साधारण मनुष्य मत समझो। ठीक ही कह रहे हैं, लेकिन जिस भाषा में कह रहे हैं वह बिलकुल गलत है। और उनकी भाषा के कारण दूसरों के सामने महावीर का, या उनके गुरु का परमात्मा-रूप तो प्रगट नहीं होता, उनका ऐतिहासिक रूप तक संदिग्ध हो जाता है।

गुरु बड़ी भारी विरोधाभासी अवस्था है; अगर बुद्धि से देखा तो आदमी जैसा, अगर हृदय से देखा तो परमात्मा जैसा। इसलिए श्रद्धा की आंख हो तो गुरु परमात्मा से जोड़ने का कारण हो जाता है। 'पुराण की कथा है, बालक ध्रुव नारद के भक्त थे, और नारद नारायण के।' सेतु बन गया। राह खुल गयी। ध्रुव की भक्ति से मात्र छह महीने में नारायण प्रसन्न हो गये। छह महीने भी लगे, यह आश्चर्य की बात है। जरूर सरकारी कामकाज, दफ्तर.! छह महीने! ध्रुव जैसा सरल हृदय प्रार्थना करे और छह महीने लगें! पुराण ने मजाक की है! सरकारी काम-काज, रेड टेप! फाइलें सरकने में वक्त लग जाता है। तुम चकित होते हो कि छह महीने, इतने जल्दी हो गया; मैं चकित हो रहा हूं कि छह महीने लगे, इतनी देर लगी! बाल-हृदय से प्रार्थना उठे, तत्क्षण पूरी हो जाती है। इतने निर्दोष हृदय से उठी प्रार्थना में कमी क्या हो सकती है कि छह महीने लगें? हां, पुराण लिखनेवालों को शायद छह महीने बाद पता चला होगा। लेकिन प्रार्थना हो, निर्दोष हो, तो क्षण का भी फासला नहीं है, प्रार्थना तत्क्षण पूरी हो जाती है। यही तो प्रार्थना का चमत्कार है। उसमें देर लग जाए, यह संभव नहीं; क्योंकि प्रार्थना समय के बाहर है, समयातीत है। आकाश में ध्रुव तारा तो अभी भी है; ध्रुव की कथा बनी, उसके पहले भी था। लेकिन ध्रुव की घटना इतनी महत्वपूर्ण है और उसकी स्थिर भक्ति इतनी स्थिर थी, उसकी प्रज्ञा ऐसी थिर थी कि सारे अस्तित्व में ध्रुव से ज्यादा, ध्रुव तारे से ज्यादा थिरता का और कोई प्रतीक नहीं मिला। वह अकेला तारा है जो ठहरा हुआ है, अपनी जगह पर, कोई उसे हिलाता नहीं, अकंप! इसलिए ध्रुव तारे से ध्रुव का नाम जुड़ गया।

'इससे अन्य ऋषि-मुनि ध्रुव के प्रति ईर्ष्या और नारायण के प्रति शिकायत से भर गये।'...ऋषि-मुनि न रहे होंगे। क्योंकि जहां तक ईर्ष्या है वहां तक कैसा ऋषि, कैसा मुनि! मगर इसी तरह के ऋषि-मुनियों से हम परिचित हैं : ईर्ष्या है, दौड़ है, महत्त्वाकांक्षा है, जलन है, शिकायत है! और उनकी शिकायत तर्कयुक्त भी मालूम होती हैं; वर्षों से तपश्चर्या कर रहे थे, उनको तो न मिला और छोटे बालक को मिल गया, जिसका कुछ अर्जन नहीं! इसे ध्यान रखो : सांसारिक मन कहता है, भगवान को भी अर्जित करना होगा; जैसे वह भी कोई संपदा है, बैंक-बैलेंस है। भगवान मिला ही हुआ है, सिर्फ स्मरण करना है, अर्जन नहीं। सरल हृदय उसका स्मरण करता है, प्रत्यभिज्ञा हो जाती है। गणितवाला हृदय, गणितवाली बुद्धि अर्जन करती है—कमाओ! उपवास करो, व्रत करो, त्याग करो, यह करो, वह करो—कमाओ! दावेदार बनो! स्वभावतः जब तुम कमाते हो तो भीतर से यह भी उठता है, बड़ी देर लग रही है, इतना कमा लिया—अभी तक नहीं, अभी तक नहीं! और गर ऐसे कमानेवाले लोगों के बीच में किसी को अचानक मिल जाए जिसने कुछ भी न किया; छोटा बच्चा, जिसके पास समय ही न था करने को कुछ—तो स्वभावतः ईर्ष्या जगेगी कि यह तो फिर अन्याय हो गया। यह तो इनका बस चले तो ये ऋषि-मुनि परमात्मा को अदालत में ले जाएं कि 'यह अन्याय हो रहा है। कहावत तो सुनी थी कि देर है अंधेर नहीं; लेकिन अब तो अंधेर भी हो रहा है। देर तो हो ही गयी है कि जिंदगीभर तपश्चर्या की, व्रत-उपवास किये, सब फेहरिश्त तैयार रखे हैं..।' फाइलें ऋषि-मुनियों की तैयार हैं, उन्होंने क्या-क्या किया है, उसमें खूब बढ़ा-चढ़ाकर लिखा हुआ है। और इस दो दिन के

गुरु इस दुनिया में सबसे बड़ा विरोधाभास है, सबसे बड़ा पैराडाक्स। अगर तुम गुरु को एक तरफ से देखो, अपनी तरफ से, तो तुम्हारे जैसा है। अगर तुम दूसरी तरफ से देखो तो परमात्मा जैसा है। इसलिए तो कोई भी अपने गुरु के लिए तर्क नहीं कर सकता, न प्रमाण जुटा सकता है

ठीक से तुतलाता भी नहीं, यह क्या तो प्रार्थना करेगा, कहां से संस्कृत का शुद्ध उच्चार लाएगा, वेद-मंत्र कहां जानता है—इसको मिल गया! बुद्धि का चिंतित होना स्वाभाविक है, क्योंकि बुद्धि गणित है।

यहीं समझ लेना चाहिए, प्रार्थना को न तो भाषा की जरूरत है, न शास्त्रों की जरूरत है, सिर्फ प्रेम की जरूरत है। छोटे बालक जैसा प्रेम पर्याप्त है; उससे ज्यादा की कोई जरूरत नहीं है। तुम अगर फिर से अपने छोटे बालक जैसे प्रेम को पुनः पा लो तो सब शास्त्र दो कौड़ी के हैं। तो कोई व्रत-उपवास जरूरी नहीं है। उतनी सरल हृदय से तुम्हारी प्रार्थना उठ जाए, पूरी हो जाएगी।

लेकिन ऋषि-मुनि एक तरफ ईर्ष्या से भरे हैं, एक तरफ शिकायत से भी भरे हैं! अन्याय हो गया था!

ध्यान रखना, धर्म के मार्ग पर अर्जन की भाषा छोड़ो; अन्यथा तुम संसार को ही खींचे लिए जा रहे हो। छोड़ो ये बातें। परमात्मा, तुम क्या करते हो, इससे नहीं मिला; तुम क्या हो, इससे मिलता है। तुम्हारा होना शुद्ध हो; तुम्हारा होना निष्कलुष हो, तुम्हारा होना कुंआरा हो, छोटे बच्चे जैसा हो!

जीसस ने कहा है : जो छोटे बच्चों की तरह होंगे, वे ही मेरे प्रभु के राज्य में प्रवेश करेंगे।

'ऋषि-मुनि इकट्ठे हो गये, विचार करने लगे। एक मछुए ने उनको अपनी नाव में बिठा लिया। वहां जगह-जगह सफेद चिन्ह् दिखायी पड़े। पूछने पर मछुए ने कहा, ये वे स्थान हैं, जहां ध्रुव ने पिछले जन्मों में तपश्चर्या की थी।' इससे ऋषि-मुनि राजी हो गये होंगे। यह बात फिर उनकी समझ में आ गयी होगी, फिर गणित में बैठ गयी। यह तो बहुत कठिन होता अगर मछुआ कहता कि बस ध्रुव ने मांगा और भगवान मिल गये; कोई तपश्चर्या पीछे नहीं है, कोई यात्रा पीछे नहीं है। कहानी सरल हो गयी। ऋषि-मुनियों की शिकायत कम हो गयी होगी।

मेरे देखे कर्म का सिद्धांत तुम्हारे सांसारिक गणित का फैलाव है। तुम कहते हो, फलां आदमी आनंद भोग रहा है, पिछले जन्मों में पुण्य किये होंगे; क्योंकि यह तो तुम बरदाश्त कर ही नहीं सकते कि इसी जन्म में और आनंद भोग रहा हो! दूसरा आदमी मजे कर रहा है, सफलता पा रहा है; तुम कहते हो, 'ठहरो! वक्त आएगा जब भोगोगे! अगले जन्म में देखना, सड़ोगे, नरक में पड़ोगे! यह चार दिन की चांदनी है, फिर अंधेरी रात!' ऐसे तुम अपने मन को समझा लेते हो।

कर्म का सिद्धांत साधारणतः तुम्हारे मानसिक गणित का ही फैलाव है। उससे तुम हल कर लेते हो, मामला साफ हो जाता है, झंझट खत्म हो गयी। फिर तुम्हें अड़चन नहीं होती। अगर मैं कहूं बस, बिना कुछ किये परमात्मा मिल गया, तुम कहोगे, 'यह बात जरा संदिग्ध है; हम इतना कर रहे हैं और न मिला!' अगर मैं कहूं, जन्मों-जन्मों में मेहनत की, तब तुम कहोगे, 'ठीक है, दया आती है, मिलना ही चाहिए।' गणित में बात बैठ गयी।

मछुए की बात सुनकर ऋषि-मुनि शांत हो गये होंगे। मछुआ बड़ा होशियार रहा होगा। मछलियां पकड़ते-पकड़ते आदमियों को पकड़ना जान गया होगा। ध्रुव से उनकी नाराजगी चली गयी होगी, परमात्मा से शिकायत भी चली गयी—बात सब गणित में आ गयी!

और मैं तुमसे कहता हूं, प्रेम गणित में नहीं आता। और मैं तुमसे कहता हूं, प्रार्थना गणित में नहीं आती। और मैं तुमसे पुनः कहता हूं : तुम क्या करते हो, इससे परमात्मा के मिलने का कोई भी संबंध नहीं—तुम क्या हो, तुम्हारा होना ही एकमात्र पाने का उपाय है।

— ओशो

भक्ति–सूत्र,

बीसवां प्रवचन, अंतिम प्रश्न,

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)